|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **Verse, Character, Word** | **Intended Word** | **Dialogue** |
| generallyBottom 1:2:2 |  | You were best to call them generally, man by man,according to the scrip. |
| agggravateBottom 1:2:72 |  | ...But I will aggravate my voice so that I willroar you as gently as any sucking dove... |
| obscenelyBottom 1:2:94 |  | We will meet, and there we may rehearse mostobscenely and courageously. Take pains. Be perfect. |
| odiousBottom (as Pyramus) 3:1:72 |  | Thisbe, the flowers of odious savors sweet --(Corrected by Quince in next line.) |
| CavalieryBottom 4:1:22 |  | Nothing, good monsieur, but to help Cavaliery Cobwebto scratch... |
| heardBottom 4:1:209 |  | The eye of man hath not heard... |
| seenBottom 4:1:209, 210 |  | ...the ear of man hath not seen... |
| handBottom 4:1:210 |  | ...man's hand is not able to taste,... |
| tongueBottom 4:1:210, 211 |  | ...his tongue to conceive,... |
| heartBottom 4:1:211, 212 |  | ...nor his heart to report what my dream was. |
| paramorQuince 4:2:10 |  | Yea, and the best person too, and he is a very paramourfor a sweet voice. |
|  |  |  |
|  |  |  |
| defloweredBottom (as Pyramus) 5:1:280 |  | O wherefore, Nature, didst thou lions frame,Since lion vile hath here deflowered my dear. |

 |